

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: इस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

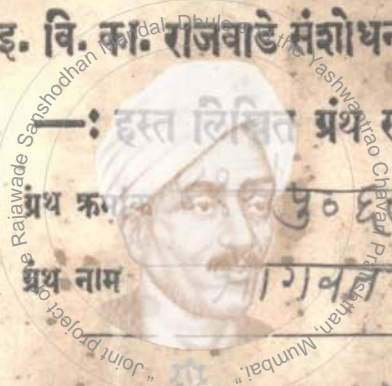
५३०

ग्रंथ नाम

सांगवा

विषय

कथा - पुराणे



ज्याते ह्यणनीसद्यधर्म॥तोहीकेवळअधर्म॥गोत्रवधान्या  
 संभ्रम॥हापुर्णअधर्मधर्मासी॥७॥व्यासतरितोजारपु  
 त्र॥तेणेंचिकर्मेपाराहार॥द्वेषियावशिष्टविद्यामित्र॥व्या  
 निमच्छरपरस्पर॥१८०॥आचूलाआपुलियागुणगुणा॥नाय  
 केयाजयानिराना॥तेविनायकोनिदरिगुणा॥विनायेसंभाष  
 णा॥आदेरवंदती॥४॥यालासितेपतिमंद॥अविनीतसदास्ति  
 व्य॥विषलागिविषयाद्य॥अतिलुब्धलालुष्ये॥२॥स्तोक॥  
 कोकेव्यवायामिषमद्यसेवानिशास्तुजंतोर्नहितत्रेयोदना॥  
 व्यवस्थितस्तेयुविवाहयज्ञसुतंग्रहेरासुनिवृत्तिरिष्टा॥११॥  
 लीका॥वेदनकरितांप्रेरणा॥विषयावरिवासना॥स्वभावंसक  
 लजन॥सुर्वदाजाणासवसि॥५॥माससवनामद्यपाना॥मि  
 थुनीभूतमेधुना॥येअर्थीसर्वजनी॥तीव्रवासनासर्वदा॥८५॥  
 जैथेंसेव्यासेव्यपरवडी॥विवंचनाकोणनिवडी॥लागलीवि



2

षयां विगोडी ॥ ते अनर्थकोडी करिले ॥ ति ॥ ८५ ॥ आगिला गलि  
 यां का पुसा ॥ विज्ञ वितां न विज्ञे जसा ॥ ते वि विषय वंता मानसा  
 विवेकु सहसा उपजना ॥ ८६ ॥ जाल्याले अंगत बडि सा ॥ निज  
 मरणा विसरे मासा ॥ कां मुठी वपया विया आडा ॥ न हि मा  
 जि आपैसा वानर उडव ॥ ८७ ॥ दुधमिन लियामां जर ॥ न  
 म्हणे द्विज अंय जघर ॥ ते वि विषय उन्मत्त नर ॥ न करिती वि  
 वार सव्या सव्य ॥ ८८ ॥ तव वल्लय विषय चाडे ॥ योनि शंफ  
 र घडे पुटे ॥ याला गि विदं चाले ॥ व ॥ श्रम पाडे वि भाग केले ॥ ८९ ॥  
 जैसे अफाट पृथ्वीचे आंग ॥ त धस प्रद्विपे कर नि भाग ॥ मग  
 पिन्ताधिकारें चांग ॥ धरा सांग अक्रमिले ॥ ९० ॥ का अनाना व्रत  
 मेघ जळा ॥ धरणें धरुनि घालि जेतळा ॥ मग न मेचि दाखें दा  
 दाळा ॥ पीकाला गि जळा का टिजे पाटे ॥ ९१ ॥ अनिमाना दा  
 कारा ॥ साधुनि कि जे वाजतरा ॥ मग नाना धनी मधुरा ॥

११९५॥

११९५॥

28

वाजविजेयं त्रासप्रस्वरं जेवि ॥ १८ ॥ एथातेसे उहं स्वका वि  
 षयां सि ॥ वेदने मिलेने मासि ॥ तेचि वेदज्ञाष्येसी ॥ १९ ॥  
 ॥ २० ॥ आइके तुजफासी सागेन ॥ २१ ॥ आवरावयायो निश्रया  
 मैथुनि विवाह प्रतिष्ठा ॥ लाउ निया निजनिहा ॥ वर्णव रि  
 षाने मिले ॥ २२ ॥ भलती स्त्री भलवानर ॥ मैथुनी होये यो  
 निसंकर ॥ तो चुकवावथा प्रकार ॥ विवाह निधीरने मि  
 लावे दे ॥ २३ ॥ धर्मपत्नी ॥ विग्रहरण ॥ विवाहीने मिलास  
 वर्ण ॥ तेथे सप्रपंचमय जन ॥ स्वगोत्री लक्षकरुनय ॥ २४ ॥  
 तीही वेदतिही वर्ण ॥ वेदसाहु उनिया जाण ॥ सवेद आ  
 णी सवर्ण ॥ पाणिग्रहणने मिडे ॥ २५ ॥ कया सवेद सवर्ण ॥  
 जीसि नाहीर जो दर्शन ॥ ते ही पीयापे यांचुन ॥ करावें लुग ॥  
 विधानोक्त ॥ २६ ॥ धर्मार्थ कामाचरण ॥ अच्यवन करावें ॥  
 पण ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥



3

करितां वधुवरापाणि ग्रहण ॥ साक्षिदेवद्वीजहुतारान ॥ इ  
तरास्त्रीथामातेसमान ॥ स्वदारगमननेमिले ॥ २०० ॥ करि  
तां विधुन विवाहासी ॥ वेदारयाचिअज्ञावैसी ॥ सांडठ  
निसकळस्त्रियासी ॥ स्वदारेपासिमैथुन ॥ १ ॥ नेमिलेस्व  
दारामैथुन ॥ तेहिअहोरत्रनाहिजाण ॥ प्रजार्थास्त्रीसे  
वन ॥ रतुकाळीगमननेमसा ॥ २ ॥ रतुकाळीज्यास्त्रीगमन ॥  
तेपुरषब्रह्मचारीसंपुर्ण ॥ वेदेनेवृत्तिपरआपण ॥ यारपा  
तेजाणभोगातेनेमी ॥ ३ ॥ रयायेयावामिषा ॥ वेदेनेमकेला ॥ ५६  
कैसा ॥ नघडाव्यापशुहिसा ॥ संकटआयासाखयेदोनी  
॥ ४ ॥ आवडीखावथामासा ॥ अथवाखगीविथाआशा ॥ जे  
करितीपशुहिसा ॥ तयांपुरषांअद्यःपतन ॥ धानिष्कामके  
मैपशुहिसा ॥ करीतरीतेनिष्कामुकैसा ॥ तेयेनिगमाचाने  
मुईसा ॥ सुख्येअहिंसासर्वधर्मी ॥ ५ ॥ निसनकराव्यामा

॥५६॥

५६

सप्तक्षण ॥ यज्ञीपुरोडांससेवन ॥ तेहिपरमीतजाण ॥ स्वेच्छा  
 मासादनवारिलेंवेद ॥ ७ ॥ यागकरुनिसूत्रामणी ॥ प्रव्रत्तामद्य  
 पानी ॥ हेवेदाज्ञाजोससमानी ॥ तोस्वधर्मविरणीनागवला ॥ ८ ॥  
 जेकमीमद्यपानघडे ॥ तोस्वधर्मकपातोजीभझडे ॥ लालुष्य  
 मुललेबापुडे ॥ वेदविषयाकडेवेदिते ॥ ९ ॥ यागकरितासूत्रा  
 मणी ॥ स्वयेनकावेमद्यपानी ॥ तेयइशेषअवघ्राणी ॥ परि  
 सर्वथाचदनींचालुंनये ॥ १० ॥ वेदविषयाचेंत्रिविधविंदान ॥ मै  
 थुनमांससुरापान ॥ यदधीनवृत्तीचिप्रमाण ॥ हेमनागतपु  
 ष्वेदांचें ॥ ११ ॥ विषयापासुनिनिवृत्ती ॥ वेदविभागेंहंविद्योती ॥  
 परिधराविविषयासक्ती ॥ हेनघडेवेदोक्तिंसर्वथा ॥ १२ ॥ वेचु  
 नियांनिजधन ॥ करुनियांविवाहयज्ञ ॥ सेवावेमद्यमांसमै  
 थुन ॥ हेवेदवचनकदानघडे ॥ १३ ॥ श्रुतक ॥ धनवधमेकफल



(h)

यतो वैज्ञानं सुविज्ञानमनु - शोती ॥ गृहपुयुजंति कळेवरस्य  
 मृत्कंनपश्यंति दुरतवीर्य ॥ १२ ॥ टीका ॥ नायको निभगवत्कथा ॥  
 ज्ञानाभिमानो नाउक्तेन हता ॥ धने परमार्थुयावाहाता ॥ ते हि  
 स्वधर्मतानळविती धर्म ॥ १३ ॥ विषयां विया कामना ॥ सर्वसं  
 वेचित्ति धना ॥ ते विधर्मार्थं विचितां जाणा ॥ सांडि प्राणकवडया  
 साटि ॥ १५ ॥ जया धनवे निपांते ॥ धर्मु वि आत्मासे निजांगे  
 जे विपाया एके नियोगे ॥ साहस निधि वेगं आनु उहाति ॥ १६ ॥  
 बीजते थस ह म फ ला ॥ चं न तं प मि ल ॥ ज ला वा ठा ई के व  
 ल ॥ नां द ति स क ल र स स्वा द ॥ १७ ॥ दे ह ते थ अ से क र्म ॥ रू प जे थ  
 व से ना म ॥ ध न ते थ उ त्त मो त्त म ॥ स क ध र्म स हा अ स ती ॥ १८ ॥  
 जे विये का द्शी ब्र त योगे ॥ जा ग रीं गी त न्य स पा गे ॥ तु ल्या दे  
 वो ला ग वे गे ॥ आ नु ड नि जां गे ॥ नि ज भ क्तं क रीं ॥ १९ ॥ त वि धा  
 ना विया पा टो वा ठे ॥ प र म ध र्मे सं पी डे गा ठे ॥ ध र्मु ते थ उ ग ड

(१५)

१९

१४

जी॥ज्ञानाचिमेटी॥विज्ञानेसी॥२०॥चंद्रास्तववाटतीकळा  
 जीवनास्तवजिक्हाळा॥तेविधनास्तवसोज्ज्वळा॥धर्म्या  
 सोज्ज्वळाधार्मिकांचरी॥२१॥धर्मतेथमुद्दुज्ञान॥ज्ञानतेथे  
 विज्ञान॥विज्ञानतेथेसमाधान॥शातिसपुर्णनादेतेथे॥२२॥  
 एवढेफळज्याधनापासी॥मुखवचिनिविषयासी॥देहलोमें  
 मुलतीपिसी॥आगिच्यामृत्पासीवीपरले॥२३॥उपजलेनिदि  
 वसवहे॥देहानेकाळग्रासीवजासा॥हेनीचनवेमरणकैसे॥  
 देहलोभवहेविसरले॥२४॥ज्यावेसादेखतांकेस॥काळगि  
 छिवाळवसा॥मगनासण्याचिदहा॥मुद्दुनिघसाग्रासीका  
 वु॥२५॥गिलुनीयांतरूपपण॥आपिवाधक्यकंपायमान॥अ  
 सेकाळाचेविदान॥दुर्धरपणअहंआदिका॥२६॥ज्यावेनिच  
 पेटघाते॥मरणआणीअमराते॥मांमुखतेथेजीवीताते॥अ  
 इचितेदृढमानिति॥२७॥मुखीदेहेचितेवंअनिय॥मांतेथिचे  
 मागकायशाखत॥परिधनवेचुनिविशयार्थ॥मुलतेज्ञानछिमोगा॥२८॥



5

१८

असे न श्वर भोगज जी ॥ ते भोगावया रिधावे स्वर्गा ॥ तदर्थं भोगी  
 प्रवर्तनी योगी ॥ लागवेगी भोग छा ॥ अथा सुख भोगावया वेगी  
 पंतं गुजे विघालि आगी ॥ ते विई हा मुत्र भोगी ॥ पतना लागी पा  
 वनी ॥ १० ॥ खिळं मिषम दूषण ॥ हे वेदोक्त भोगजाण ॥ अर्थे के  
 विघडे पतन ॥ ते वेद विधान नेण ती मु खी ॥ ११ ॥ **श्लोक ॥** यं द्वा  
 ण भक्षो विहितः सुखाय तत्रागारं लभनेन हिंसा ॥ एवं  
 व्यवाज प्रजया नु सा ॥ विदुर्न विदुस्व धर्म ॥ १२ ॥  
 का ॥ वेद विहित कर्माय ॥ तथ सर्वथान क्ते पतन ॥  
 जेशु क वेद विधान ॥ तथ भोग पतन ॥ सती ना ॥ १३ ॥  
 वेदिना अर्थ वादा सा ॥ रि सा ॥ नी बा धो नि भोगा रा ॥  
 यज्ञ मिसे पशु हिंसा ॥ भोग ली सा करु था व ति ॥ १४ ॥ वे  
 दे बाली ले अलंभन ॥ या ना व वे ह्यण ती पशु हनन  
 ते स काम प्रा निति विधान ॥ निष्कामा हनन कदा न द्यडे ॥ १५ ॥  
 निष्कामा स्तिया ग यजन ॥ स्व धर्मार्थ करा वा यसा ॥ ते थ

१८

पशुचें अलं मन ॥ सर्वथा हनन करुन ये ॥ ३५ ॥ पशुचें  
 न करुनि हनन ॥ देव तो देहो ष्यंग स्पर्शन ॥ धाना व वा  
 लीजे आल मन ॥ देय झा चरण निष्काम ॥ ३६ ॥ यथे मि  
 मांस का वं मते ॥ देव तो देहो जो पशु चा घात ॥ थाना वं वा  
 ल मन ह्यणत ॥ स्वर्ग फळा र्थ ॥ अवस्थक ॥ ३७ ॥ के वळ  
 मांस मक्षणा र्थ ॥ जे करि नि पशु चा घात ॥ हिंसा दोषु  
 नें थें प्राप्त ॥ जै से बाल त मांस का ॥ ३८ ॥ देव तो देहो प  
 शु चा घात ॥ तेण स्वर्ग म हा ये प्राप्त ॥ तो हिंसा गक्षये  
 क्षया जात ॥ तेण हिंसा घात या शी का ॥ ३९ ॥ ए वं जे थें प  
 शु हनन ॥ ते कर्म स दोष पुर्ण ॥ थाला गिते ये अद्यः पतन  
 बोली जे जाण या शी का सि ॥ ४० ॥ या ग करितां सुत्रा मणी  
 पुरां आशु ध्या वा ध्राणी ॥ परि प्रवर्ता विसुरा पानी ॥ हवे द  
 विधानी आसना ॥ ४१ ॥ वेद विहिते राणि अहण ॥ हे प



6

कार्य स्वदा राग मन ॥ परि र्थ नि ह्य मै थु न ॥ हे वे द क्षा  
 जा ण आ स ना ॥ ४ ॥ म द्य भो स मै थु न प्र स र्ग ॥ स्व छान क  
 रा व या भो ग ॥ वे द द्यो ति ला वि वा ह या ग ॥ भो ग भा ग नि  
 ये मा र्थ ॥ ४ ॥ ने णो नि यां वै सि था मु ध ध र्म ॥ या ग्मि से  
 अ ध र्म ॥ प्र व लो नि का ये क र्म ॥ भो ग सं भ्र मा ॥ भो गि ती  
 मुर ये ॥ ४ ॥ श्लो क ॥ य य न वे वि दो सं त स्त व्ध्या सद मि मा  
 नि नः ॥ प मु नु द्व ह्य ति वि लब्धा प्र ह्य स्वा द ति ते च तान् ॥ १ ॥  
 टिका ॥ ने णो नि मु ध वे द वि था जा ते ॥ अ ति गर् वा ये नि उ ड्ढे ते  
 आ प ण यां भा नु जा ते ॥ अ वि धि प मु ते धा त क रि ती ॥ अ धा के व  
 ह्य अ मि चार म ते ॥ पा वो नि त्त क ह्य भो गा ते ॥ ऐ सि या भा नु नि  
 वि श्वा सा ते ॥ स्व द्वा प मु ते धा त क रि ती ॥ अ धा अ वि धि प मु  
 ते धा ति ती ॥ या या शी का ये दे हा ती ॥ भा रि ले प मु मा र्थ ये ती  
 स ह्य क त का ती धे उ नी यां ॥ ४ ॥ ए वं नि मा लि यां या शी कां सी

१९

१९

6A

मक्षीले पशुभक्षिनीयासी ॥ जैसेसे विले विषया ज्यासी ॥ घ्रा  
 सी प्रोष्यासिंणो ॥ समुहं ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ द्विषंतः परकायषु  
 स्वात्मानं हरिमीश्वरं ॥ मृतकेसानुबधस्मिन्त्यद्ब्रह्माहं पतस्य  
 धः ॥ १ ॥ धाटीका ॥ परमात्मा जो श्रीहरि ॥ तो अंतर्गामी सर्वशरीरी  
 ते ये परावा जो द्वेषु करी ॥ तेणें द्वेषिलो हरीनिजामा ॥ ७ ॥ अथापरा  
 सिजो करी आपधातु ॥ तेणें आपलाके लाधातु ॥ यासि सह  
 कुटुंब व्यधः पातु ॥ रौरवातु तप उती ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ये केवल्य  
 मसंप्राप्ता ॥ ये चातीता कर्मभूतानां ॥ त्रैवर्गिका ह्यस्य णिका अपा  
 स्मानं धातयंतिते ॥ १ ॥ धाटीका ॥ स्वज्ञान स्वतातरती ॥ आज्ञान  
 सशाना शरण येती ॥ तेणें यासि केवल्य प्राप्ति ॥ या वचनोक्ती  
 विश्वासे ॥ १ ॥ जे व्यज्ञाने नासे ज्ञान ॥ यासि केवल्य ज्ञानो  
 सिमान ॥ ज्या ये विषईला लुप्यमन ॥ ते पुत्रपुण्यसुधा ती ॥ ७ ॥



साधावयाव्यर्थकाम॥जेकरिति अस्मिन् चारधर्म॥हेत्रैवर्गि  
क वोर कर्म॥अस धाती परम ज्या ये या॥३॥देहाचिया गो  
म टिया॥जेकरिति अस्मिन् चार क्रिया गतेणें कर्म आपणिया॥स  
जिलारायानिज धातु॥४॥श्लोक॥एतदासह नो शोता आशा  
ने शान भानिनः॥सृजिलसीदे ति हत दा यावे काळ गुस्त मनो  
रथाः॥११॥टीका॥कामत्रोधी अति अद्भुत॥अर कर्म जि अशा  
त॥तें आप आप्या अन हीन॥निजा स धात जोडील॥५॥स्य  
ये कर्म करिति आविष्टि॥अज्ञान ते चि प्रतिपादी॥तें चि ह्येणे २  
ती मुडु विष्टि॥ज्ञान त्रिष्टु व प्रणो निया॥५॥धाते काम्ये क  
र्मा छिळी किले॥की माहा गो ह्ये कळीले॥गर्व द भादि मे दे  
रिचिले॥काळ सर्पे गि किले स द्दु डी सी॥६॥गर्वादि ज्वरि  
त मुखे॥गोड पाणी कटु गके॥विषय प्राय विषय सुखें॥अ  
ति हरि खें॥से विती॥७॥असिया विषया ला गि पा हें॥आ  
हा मानु नि निज दे हो गर चुं नि ना ना उ पा वो॥व्यर्थ संग हो स्वये करि ती  
॥८॥

७

२

१८५

११

श्लोक॥ हिवासाया सराचिताग्रहापयसुहृद्विवः॥ तमोचि  
 पसु निष्ठे तो वा सुदेव पराज्जुखाः॥ १५॥ टीका॥ मरणं सी  
 सडचेता॥ श्रीमेळविति श्रीमंत॥ गृह दारा पुत्रवित॥ नाना  
 वस्तुजातसंग्रहा॥ १६॥ असेमोग आथासयुक्त॥ साहुडुनि  
 शानगर्वसमस्ता॥ शानाभिमाने नैजई जत॥ अंधंतभाते अ  
 तिगवीरी॥ १७॥ तेर्ये आंधारा चवके॥ होउनि गकती आध  
 के॥ जेथे मोहोरा विवेकाके॥ अंधंतममेके आधिकवा  
 टे॥ १८॥ अथा अंधाराते पकारयेता॥ निखिलकाळाहो  
 येसविता॥ जेयगाटमुर अथवा॥ अतिमूटना स्वये पावे॥ १९॥  
 जेथे सुपृप्ति सि सौपलागे॥ अथ सुअथ सिजे सवर्गि॥ तेथ  
 घर बाधो निसर्वांगे॥ निदाको पदो घे सदा वसती॥ २०॥ जे  
 थमजनविमुरवानरा॥ आधुःपतन अभिमान दारा॥ जे  
 विआभाविपडलाचीरा॥ तेविबाहिरा निघोन राके॥



8

29

॥ अधाजे वासुदेविसदा मुर्वैख ॥ ज्यासि हरि मम जनि  
 नाहि हरि खे ॥ याचि दशाहे अथा मुख ॥ अति दुःख  
 दुःख भोगिती ॥ ६५ ॥ असी अमकाचि गति ॥ सा गीत  
 ली आहाच स्थिति ॥ वाचु नि याचि ये दुगती ॥ वाग्देव  
 नामिति पदवदता ॥ ६६ ॥ अमकाचि गति बोलणे ॥  
 थापरि सर्वांग मुक्त दौण ॥ प्राण जावोका सर्व प्राण  
 परि दुःख कोण बोल वे ॥ ६७ ॥ याथातु सी थाप्रस्तका  
 जि ॥ हेदशा बोलणे पडे या जि ॥ एक विअमक वा  
 देवा हा भाजी ॥ वादे चि पाती वि टालिली नाही ॥ ६९ ॥  
 थावरि आतां नृपनाथा ॥ वका थाणि समस्त श्रोता  
 राम स्मरणे त हीता ॥ वाचे सि प्राय श्चीता ॥ सवे गे  
 कीजे ॥ ७० ॥ थाये कोनि अमकाचि गती ॥ अति रा  
 ये सि दुःख प्राप्ती ॥ राजा कोटा कळ चिति ॥ थाला गि

29

स्त्रिनि श्रीतीहरिस्मरे ॥७१॥ ज्यास्मरविलेहरीते ॥  
तोचियासिपुसोयेधे ॥ युगानयुगिभक्त्याते ॥ कोणेवि  
धितेभजनकरिती ॥७२॥ राजोवाच ॥ कस्मिन्काळेसम  
गवान्कीवर्णः किंदेशोन्मिः ॥ नाम्नांकेविधिनापुज्य  
एततद्दिहिहोत्तं ॥७३॥ श्रीका भजोपरमासा श्रीहरी ॥  
तोसृष्ट्यादियुगयुगांतरीतकोणेनमैरूपेवर्णाक्षरी ॥  
भक्तकैत्रयापरीपूजिती ॥७४॥ आणितकाकिच्याप्र  
जा ॥ कैसेनियजतिअद्याक्षजा ॥ कवणेविधिकरिती  
पुजा ॥ तेयोगीराजासागिजे ॥७५॥ तुमवेमुखिवेक  
पावचन ॥ हापुढंआभृतहिगौण ॥ साचेभजनपुजन  
विधान ॥ हृषाकरुनिसांगीजेस्वामि ॥७६॥ आयकोनि



रायाचं वचन ॥ संतोषले आवद्ये जण ॥ जाणोनि हरि गु  
णाचा प्रश्न ॥ कनिष्ठ कर भाजन बोलता जाला ॥ ७६ ॥ क  
र भाजन उवाच ॥ कृत त्रेत द्वापारं च कलि रियेष के शवः ॥  
नाना वर्ण भेदा कारे नानै विधि न योज्यते ॥ २० ॥ टीका ॥  
नाना वर्ण नाना कारे ॥ नाना नाम नानोपचारं ॥ कृत त्रेता  
द्दि द्वापारं ॥ भक्त विधारे के व पुजिती ॥ ७७ ॥ युग पर  
त्वे रूप नाम ॥ भजन विधि क्रिया कर्म ॥ भक्त पुजिति पुरुषो  
त्तम ॥ तो अनुक्रम आच धारि ॥ ७८ ॥ श्लोक ॥ द्दते मुकु  
चतुर्बोहु जे दिलो वल्कलांबर ॥ द्दछां जिनापताक्ष  
नबी मंद उक मंडलु ॥ २१ ॥ टीका ॥ द्दता युगी स्वत व  
र्ण धर ॥ ज दिल चतुर्भुज वल्कलांबर ॥ द्द उक मंडलां कि  
त कर ॥ अजिन ब्रह्म सूत्र ॥ आक्षमाळा हाती ॥ ७९ ॥

२२

२२

ब्रह्मचर्यदृढव्रत ॥ ये हि चिन्दि चिन्ता कित ॥ परमात्मा मु  
 क्तिमत ॥ दकता युगीभक्त्या परियेजिति ॥ ८० ॥ **श्लोक ॥**  
 मनुष्यास्तनदाशातनिवैरसहदः समा ॥ यजंतितपसा  
 देव ॥ रामेन च दमेन च ॥ ८१ ॥ टीका ॥ ते का क्विचस्पकळने  
 सदाशांतनिवैर ॥ स्वमता बुद्धिनिर्तर ॥ सहद मित्रपरस्परं  
 ॥ ८२ ॥ ते तपेकरावेदवयजना ॥ मानपावेमुख्ये लक्षण ॥ राम  
 दमसाधुनिपुर्ण ॥ भगवदप्रभजनस्य करिनी ॥ ८३ ॥ ते देवाय  
 नामोच्चारण ॥ दशधामिनामस्मरण ॥ ते चिनाभिकोणकाण ॥  
 एकसावधाननृपनाथा ॥ ८४ ॥ **श्लोक ॥** हंसः सुपर्णवैकुण्ठ  
 धर्मी योगेश्वरो भव ॥ ईश्वरः पुरुषो व्यक्त परमात्मेति गीयते ॥ ८५ ॥  
 टीका ॥ हंससुपर्णवैकुण्ठ ॥ धर्मयोगस्वरश्रेष्ठ ॥ आमळईस्व  
 रवरिष्ठ ॥ पुरुषोत्तमनामपाठपरमात्मात्मणती ॥ ८६ ॥ ते का ह्यी

११



वेभक्त श्रेष्ठ ॥ आनामाचानामपाटा ॥ गयेन करिति चहु  
 चडाट ॥ भवसंकट निदलणी ॥ आह इतयुगीये यजन ॥  
 तुजे सांगितले संपुर्ण ॥ आतात्रतायुगीये भजन ॥ मुतिवि  
 ध्यानते ऐक ॥ आश्लोक ॥ त्रेतायारकवणेसौ ॥ चतुरर्षी  
 हुस्त्रिमेखळा ॥ हिरण्यकरार ध्याम ॥ स्तकसृवाद्यपल  
 क्षण ॥ रणाटीका ॥ त्रेती यज्ञप्रसातमु ॥ रक्तवर्णलळनापमु  
 पिकटकेशनिर्घर्षु ॥ देवदेवतमुत्तमबहु ॥ ७ ॥ तथा  
 यज्ञपुरषानिर्मळा ॥ त्रिगुणाचितीमेखळा ॥ वेदत्रईया  
 उर्णमेळा ॥ मुतिसोहळातदातकु ॥ आस्तकसृवापाणि  
 ग्रहण ॥ हेचितथाचें उपलक्षण ॥ त्रेतायुगीनारायेण ॥ ए  
 णरपेंजाण निजभक्तध्यानी ॥ आश्लोक ॥ तंतदा मनुजा  
 देवं सर्वदेव मयं हरिं ॥ यजंति विद्यध्यात्रवा धर्मिषां ब्र

10

२३

२३

108

५३

ह्मवादिनाः॥धाटीका॥तैचजेमनुष्यजाण॥त्रैवेदीक  
 करितीयजन॥सर्वदेवस्वरूपहरिपुर्ण॥थापरियेजन  
 त्रेतायुगीये॥७॥त्रेतायुगीसर्वहिनर॥वेदोकीनियुसा  
 दर॥सर्वहिभजनतम्राधमिष्टसमग्रआतिधार्मिक॥९॥  
 तधमिष्टधार्मिकजन॥आस्थानामिनामस्मरण॥गज  
 रंकरितिसदापठण॥तेनामाशोधनआईकरोया॥९॥  
 श्लोक॥विष्णुयशसेश्रीगणेशसर्वदेवउरुक्रम॥वर्षाक  
 पिर्जयंतश्चउरुगायईरीयतीयनि॥रधाटीका॥विष्णु  
 यशसेश्रीजन्म॥सर्वदेवउरुक्रम॥वृषाकपिजयंतना  
 म॥उरुगायेपरमाहानामेस्मरती॥१०॥द्वापारिभगवष्ट्या  
 नातेयुगीचेरुजाविधान॥भक्तकैसेकरितिभजन॥  
 नामस्मरणतेआईको॥१०॥श्लोक॥द्वापारेभगवानृत्याम॥





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com